विद्या भवन गोविंदराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर

न्यूज़ लेटर

दिसंबर, 2024

प्राचार्य की कलम से :

हम सूचना युग से अब विचार युग की ओर बढ़ रहे हैं। इस नए युग में, एक ही काम को बार–बार करने या ज्ञान के पुनर्उत्पादन करने से काम नहीं चलेगा। अब वे लोग आगे बढ़ेंगे जिनका फोकस क्रिएटिविटी, समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान और नवाचार पर होगा। हमारी शिक्षण संस्थाओं को इस तरह के नागरिक तैयार करने की आवश्यकता है, जो स्वतंत्र रूप से अपनी चयनित शैली से सतत् सीखने की आदत विकसित कर सकें। इसके लिए शिक्षण संस्थानों के माहौल बनावटीपन की बजाय वास्तविक सामाजिक संदर्भों की जीवंतता शामिल होनी चाहिये। उत्पाद की अपेक्षा प्रक्रिया पर जोर तथा अंतःविषयी समझ को बढ़ावा देने के साथ स्वतंत्र चिंतन एवं अभिव्यक्ति के अवसर हों। ऐसे विद्यार्थी तैयार हों जो अपनी कल्पना शक्ति, नए विचारों को कोलैबोरेटिव तरीके से अमली जामा पहना सकें। इस तरह के विद्यार्थियों को तैयार करने की शुरुआत फाऊंडेशनल लेवल से करनी होगी। इस उम्र के विद्यार्थियों का सभी पक्षों (शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक कौशलों) का विकास तेजी से होता है। सूचनाओं की प्रोसेसिंग बहुत तेजी से होती है। न्यूरो साइंटिस्ट जैकलीन हार्डिंग अपनी किताब में लिखती हैं कि 6–7 वर्ष की उम्र में हमारे विद्यार्थी तेजी से सीखते हैं, ज्यादा फोकस होते हैं, कनेक्शन ज्यादा रफ्तार से बनते हैं। साइकोलॉजिस्ट जॉर्ज लैंड ने अपने अध्ययन में अधिक उम्रदराज व्यक्तियों की तुलना में 5 साल के बच्चे की क्रिएटिविटी का स्कोर उच्च पाया। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम ने अपनी कौशल की लिस्ट में एक नया कौशल एक्टिव लर्निंग स्किल को जोड़ दिया है। विद्यार्थियों को सतत् रूप से सीखते रहना, बिना किसी निर्देश के समाधान ढूंढना अपडेट होना जरूरी हो गया है। इस जमाने में, जब सब चीजें ऑटोमेट होती जा रही हैं, इंसान की सही तरबियत उसे उच्च स्तरीय रचनात्मकता की और ले जाएगी और कमजोर परवरिश उसे दुनिया की दौड़ मे पीछे या फारीक करवा देगी। दुनिया को नयी सोच और विश्लेषणात्मक विचार की आवश्यकता है। हमें ऐसे विद्यार्थियों को तैयार करने की आवश्यकता है जो नए विचारों को विकसित कर सकें, उन पर विश्लेषणात्मक विचार कर सकें, और उन्हें व्यवहारिक बना सकें। हमें ऐसे विद्यार्थियों को तैयार करने की आवश्यकता है जो समस्याओं का सामना कर सकें, उन्हें हल कर सकें, और नए समाधान खोज सकें।

–डॉ. फरज़ाना ईरफान

संपादन

सलाहकार–डॉ. जितेंद्र तायलिया, श्री राजेन्द्र भट्ट

प्राचार्य– डॉ. फरज़ाना ईरफान

संपादक –डॉ. गिरीश शर्मा

प्रूफ रीडिंग –डॉ. जगदीश चंद्र आमेटा

ले–आउट, डिजाईनिंग –चिराग धुप्या

विद्या भवन गोविंदराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय, डॉ. मोहनसिंह मेहता मार्ग, देवाली उदयपुर, राजस्थान

ई–मेल vbcteudr@gmail.com, 0294–2451814

Website-www.vidyabhawan.in

तनाव मुक्ति का मंत्र–संवाद करते रहना

दिनांक 5 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्य प्रो. सुषमा तलेसरा ने महाविद्यालय की प्रार्थना सभा को संबोधित किया। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने गौतम बुद्ध की कहानी सुनाते हुए कहा कि ऐसा कोई परिवार नहीं जहां किसी की मृत्यु नहीं हुई है। मृत्यु अवश्यंभावी है, अतः दुःख भी है। दुःख की अनुभूति करने वाला ही सुख का आनंद ले सकता है। उन्होंने छात्राध्यापकों का आह्‌वान किया कि वे अपने दुःखों को साथियों के साथ साझा करें और अपने साथियों के दुःखों में भी साझेदारी करें। इससे तनाव से मुक्ति पाई जा सकती है। उन्होंने तनाव मुक्ति का मंत्र दिया–संवाद करते रहना। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. फरजाना ईरफान ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जगदीश चन्द्र आमेटा ने किया।

कैंपस के रखरखाव हेतु स्थान वितरण

दिनांक 6 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय की केंपस केयर कमेटी की ओर से विभिन्न सोसायटी को महाविद्यालय में स्थान वितरित किए गए। इन सोसायटी ने नियत स्थान पर श्रमदान किया और केंपस के रख रखाव की जिम्मेदारी ली।

स्मार्ट बोर्ड अभिविन्यास

दिनांक 7 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय के संकाय सदस्यों के लिए स्मार्ट बोर्ड अभिविन्यास कार्यक्रम रखा गया। इस एक दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम में महाविद्यालय के संकाय सदस्य डॉ. मालचंद काला ने स्मार्ट बोर्ड संचालन के गुर सिखाए। फेकल्टी ने प्रशिक्षण लिया और स्वयं भी स्मार्ट बोर्ड का संचालन किया। इस मौके पर विद्या भवन गांधी शिक्षण संस्था के संकाय सदस्य डॉ. ममता श्रीमाली, डॉ. प्रियंका जैन तथा डॉ. कंवराज सुथार भी उपस्थित थे।

शोध कार्यशाला में सहभागिता

दिनांक 7 दिसंबर, 2024। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के शोध प्रभाग द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय शोध में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ.खीमाराम काक ने अकादमिक सहयोग प्रदान किया। कार्यशाला शोध दत्त विश्लेषण पर आधारित थी।

अनुरूपित शिक्षण का दूसरा चक्र संपन्न

दिनांक 10 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय में अनुरूपित शिक्षण का दूसरा चक्र संपन्न हुआ। सात दिवसीय अनुरूपित शिक्षण के दूसरे चक्र से पूर्व दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। समग्र कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् फिडबैक के लिए विद्यार्थियों से गुगल फार्म भरवाए गए। जिसका विश्लेषण टीम द्वारा किया गया। विश्लेषण की रिपोर्ट कार्यक्रम समन्वयक डॉ. जयदेव पानेरी ने रिव्यू मिटिंग में प्रस्तुत की।

रैली में भाग लिया

दिनांक 12 दिसंबर, 2024। राजस्थान सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर 'विकसित राजस्थान' थीम पर फतहसागर पाल पर रैली निकाली गई। रैली में महाविद्यालय के 45 छात्राध्यापकों ने संकाय सदस्य डॉ. मालचंद काला, चिराग धुप्या एवं सलीम मंसूरी के साथ भाग लिया।

अकादमिक सहयोग

दिनांक 12 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय की रीडर डॉ. जेहरा बानू ने राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् में आयोजित चार दिवसीय बुकलेट निर्माण कार्यशाला में भाग लिया। परिषद द्वारा 'कान्ट्रीब्यूशन ऑफ गिफ्टेड चिल्ड्रन इन पीयरग्रुप लर्निंग' विषय पर बुकलेट का निर्माण किया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

दिनांक 14 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय की यूनियन कार्यक्रम समिति ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा हरिद्वार संस्थान द्वारा प्रायोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन 7 दिसंबर को करवाया। परीक्षा में बी.एड. प्रथम एवं द्वितीय तथा एम.एड. प्रथम वर्ष के 35 विद्यार्थियों ने भाग लिया। परीक्षा का परिणाम भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के संचालक डॉ. संदीप ने प्रार्थना सभा में घोषित किया। प्रथम तरूणा जोशी, द्वितीय वसुधा शर्मा तथा तृतीय किशना राम के साथ 20 श्रेष्ठ विद्यार्थियों को परीक्षा के द्वितीय चरण के लिए चुना गया।

कार्यक्रम में संस्थान की ओर से यूनियर कार्यक्रम समिति समन्वयक डॉ. प्रीति गहलोत तथा सदस्य कुमकुम सालवी, बीना लौहार तथा उषा पानेरी को परीक्षा में सराहनीय सहयोग के लिए सम्मानित किया गया। इस मौके पर संस्थान की ओर से पुस्तकालय के लिए साहित्य भी भेंट किया गया।

शैक्षिक भ्रमण

दिनांक 14 दिसंबर, 2024। नई शिक्षा नीति के प्रकाश में स्थानीय इतिहास, विरासत, कला एवं संस्कृति के महत्त्व एवं प्रत्यक्ष ज्ञान को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय के इतिहास विभाग विद्यार्थियों ने आहड़– बनास संस्कृति का शैक्षिक भ्रमण किया। डॉ. खीमाराम काक एवं डॉ. मीनाक्षी शर्मा के मार्गदर्शन में भ्रमण से छात्रों में गहन

चिंतन कौशल बढ़ा और किसी विषय के बारे में एक अलग दृष्टिकोण से सोचने का अवसर मिला। छात्रों को ज्ञान हुआ कि यह राजस्थान के दक्षिण और पूर्व में आहड़ नदी के किनारे 3000 ईसा पूर्व से 1500 ई तक एक नगरीय सभ्यता पनपी, जिन्हें आहड ताम्र पुरातात्विक संस्कृति कहा गया। इसे बनास संस्कृति भी कहा जाता हैं। यह सिन्धु घाटी सभ्यता की समकालीन सभ्यता थी। छात्रों ने अवलोकन के दौरान देखा कि अरावली पर्वत श्रेणियों के बीच बसी इस मानवीय सभ्यता में लोगों के पास औजार और विभिन्न धातुओं की कलाकृतियां बनाने का कौशल विद्यमान था। छात्र गंगू कुण्ड भी गए।

इंटर्नशिप अभिविन्यास

दिनांक 19 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय के बी. एड. द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों की इंटर्नशिप के लिए शाला दर्पण पोर्टल पर विद्यालय आवंटित हुए। इंटर्नशिप के लिए एक दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजितय हुआ। इसमें इंटर्नशिप के उद्देश्य, इंटर्नशिप की सामान्य जानकारियां, संक्षिप्त पाठयोजनाएं, रिकॉर्ड एवं गतिविधियों पर चर्चा की गई। अभिविन्यास के बाद विद्याथियों से विद्यालय आबंटन पत्र प्राप्त कर, डायरियां, रिलिविंग लेटर, व अन्य प्रपत्र देकर विद्यार्थियों को इंटर्नशिप विद्यालय में जाने के लिए रिलिव किया गया।

स्नातक परिषद की बैठक

दिनांक 19 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय में स्नातक परिषद की बैठक प्राचार्य डॉ. फरजाना ईरफान की अध्यक्षता में हुई। बैठक का उद्देश्य डॉ. एस.एन. मुखर्जी वाद–विवाद प्रतियोगिता का विषय चयन था। बैठक में महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य प्रो. एम.पी. शर्मा ने प्रतियोगिता के लिए कुछ विषय चयन हेतु प्रस्तावित किए, जिसमें अध्यापक शिक्षा में आईटीईपी कार्यक्रम विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता की दृष्टि से उपयोगी होगा, विदेशी विश्वविद्यालयों द्वारा भारत में शिक्षा प्रबंधन, भारतीय ज्ञान परंपरा, गांधी शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता आदि शामिल थे। स्नातक परिषद की अगली बैठक में उपर्युक्त विषयों में से एक विषय का चयन किया जाएगा। बैठक में डॉ. सुयश चतुर्वेदी सहित अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता

दिनांक 19 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय में यूनियन कार्यक्रम के अंतर्गत पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता में सभी दस परिषदों के सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रत्येक परिषद

द्वारा दो–दो पोस्टर का निर्माण किया गया। प्रतियोगिता की थीम 'पर्यावरण' थी। प्रतियोगिता के पश्चात् विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए पोस्टरों की प्रदर्शनी लगाई गई। निर्णायक प्रो. एम. पी. शर्मा, प्रो. सुषमा तलेसरा एवं डॉ. सुयश चतुर्वेदी थे। प्रतियोगिता में एम.एड. प्रथम वर्ष एवं विज्ञान अ समूह प्रथम, विज्ञान ब और हिन्दी एवं संस्कृत समूह द्वितीय तथा सामाजिक विज्ञान एवं भूगोल समूह तृतीय स्थान पर रहे।

मध्यावधि परीक्षाएं

दिनांक 19 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय के बी. एड. द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों की मध्यावधि परीक्षाएं आयोजित हुईं। परीक्षाएं दिनांक 11 से 19 दिसंबर तक चलीं। परीक्षा में 160 विद्यार्थियों

ने भाग लिया तथा तीन विद्यार्थी अनुपस्थित रहे। परीक्षा की तैयारियों के लिए परीक्षा विभाग ने 2 से 5 दिसंबर तक संकाय सदस्यों से प्रश्न पत्र मांगे। संकाय सदस्यों ने निर्धारित प्रारूप में प्रश्न प्रत्र बना कर विभाग को भेजे। विभाग ने प्राप्त प्रश्न–पत्रों को टाईप करवाकर फोटोकॉपी करवाई तथा परीक्षा की अन्य व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया।

बेडमिंटन प्रतियोगिता

दिनांक 19 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय में चल रहे बेडमिंटन टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले खेले गए। टूर्नामेंट में 73 मुकाबले हुए, जिसमे 17

महिला व 57 पुरुष प्रतिभागियों का नामांकन हुआ। महिला वर्ग में प्रथम रीना खराडी, द्वितीय दिव्या टांक व तृतीय स्थान पर सुमन चौधरी रही। पुरुष वर्ग में प्रथम सलीम मंसूरी, द्वितीय सेठाराम व तृतीय स्थान पर पुष्कर मेघवाल रहे। नॉकआउट चरण पर आयोजित इस प्रतियोगिता के समापन पर महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य प्रो. एम.पी. शर्मा, प्रो. सुषमा तलेसरा एवं डॉ. सुयश चतुर्वेदी मुख्य अतिथि थे। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने खेल से शारीरिक–मानसिक स्वास्थ्य और साथ ही अन्य पहलुओं का महत्त्व बताते हुए खिलाड़ियों की हौसला अफजाई की। प्राचार्य डॉ. फरजाना ईरफान ने खेल के दौरान आपसी मेल मिलाप और टीम भावना पर अपने विचार रखे।

हार्टफुल टीचिंग पर कार्यशाला

दिनांक 21 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय के बी. एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए हार्टफुलनेस मेडिटेशन संस्थान की ओर 'हार्टफुल टीचिंग' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला हुई। कार्यशाला में 6 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। इनमें विषय विशेषज्ञ द्वारा किस तरह एक अध्यापक हार्टफुल अध्यापक बनकर बच्चों के हृदय से जुड़ सकता है और किस तरह वह अपने व्यवहार एवं प्रेम के द्वारा बच्चों में आदर्श विकसित कर सकता है, इसका सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक अनुभव कराया गया। कार्यशाला के प्रमुख विषयों में हार्टफुल टीचर, फैसिलिटेशन स्किल, हार्टफुल कम्युनिकेशन एवं हार्टफुल एजुकेशन, बच्चों के मस्तिष्क विकास आदि प्रमुख रहे। इनके बारे में अलग–अलग सत्रों में विस्तार से बताया गया और इसे कैसे अपने जीवन में आत्मसात करके एक अध्यापक अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल जिंदगी में प्रसन्नता से आगे बढ़ सकता हैं, इस महत्त्व को समझाया गया। साथ ही ब्राइटर माइंड ट्रेनर द्वारा मस्तिष्क का विकास कैसे किया जाए, उसके लिए मस्तिष्क की एक्सरसाइज भी बताई गई। सभी प्रतिभागियों ने रुचिपूर्वक भागीदारी की। इस कार्यशाला का मुख्य ध्येय यही सीखना था कि हार्टफुलटीचर किस तरह से खुद प्रेरित होकर अपने स्टूडेंट्स को प्रेरित कर सकते हैं। विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में ये प्रयास बहुत सार्थक सिद्ध हुए हैं। इनका दूरगामी सकारात्मक प्रभाव पूरे स्कूल और फिर सोसाइटी, पूरे राष्ट्र पर पड़ना निश्चित है।

ध्यान सत्र का आयोजन

दिनांक 21 दिसंबर, 2024। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित प्रथम विश्व ध्यान दिवस के उपलक्ष में प्राचार्या के साथ संकाय सदस्यों ने भी ध्यान

महोत्सव में भाग लिया। हार्टफुलनेस मेडिटेशन संस्थान की ओर से आयोजित कार्यक्रम में पहले ध्यान का महत्त्व बताया गया तथा फिर सभी ने निर्देशों के अनुसार ध्यान सत्र में भाग लिया। सभी ने ध्यान के महत्त्व को गंभीरता से लिया तथा नियमित ध्यान अभ्यास करने का संकल्प किया।

अनुसंधान पर राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक 21 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय में शिक्षा में गुणात्मक अनुसंधान विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला समन्वयक डॉ. मनीषा शर्मा एवं डॉ. अख्तर बानो थीं। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य

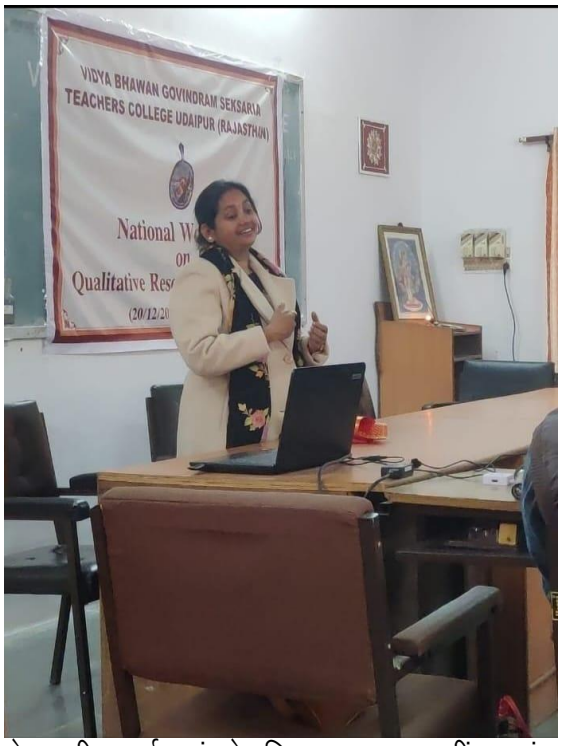

प्रो.एम.पी. शर्मा एवं प्रो. दिव्यप्रभा नागर थीं। प्रारंभ में डॉ. अख्तर बानो ने कार्यशाला का आधार पत्र पढ़ा और कार्यशाला के उद्देश्य बताए। प्राचार्य डॉ. फरजाना ईरफान ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यशाला के प्रत्येक दिन तीन–तीन सत्रों का आयोजन हुआ। पहले दिन प्रो. पी.सी. जैन, प्रो. संजय लोढ़ा एवं प्रो. एस.के. कटारिया के सत्र हुए। दूसरे दिन डॉ. नेहा पालीवाल, प्रो. शूरवीर सिंह भाणावत तथा प्रो. अनिल जैन के सत्र हुए। कार्यशाला के समापन समारोह के अतिथि प्रो. सुषमा तलेसरा एवं प्रो. अनिल कोठारी थे। डॉ. मनीषा शर्मा ने दो दिवसीय कार्यशाला की रिपोर्ट पढ़ी। स्वागत प्राचार्य डॉ. फरजाना ईरफान ने तथा धन्यवाद डॉ. अख्तर बानो ने दिया।

मॉडयुल निर्माण कार्यशाला में सहयोग

दिनांक 21 दिसंबर, 2024। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के शिक्षक–शिक्षा प्रभाग द्वारा आर.एस.सी.ई.आर.टी. में कार्यरत शिक्षकों के क्षमता संवर्धन हेतु मॉडयुल निर्माण किया जा रहा है। इस हेतु आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. खीमाराम काक ने सहभागिता की।

कार्यशाला में सत्र लिया

दिनांक 22 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय की रीडर डॉ. जेहरा बानू ने 'अनुसंधान के प्रकार एवं उपकरण' विषय पर आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय इंटरेक्टीव कार्यशाला में सत्र लिया। कार्यशाला का विषय 'क्वालिटी राईटिंग स्किल फॉर सोशल साईंस रिसर्च एंड रिसर्च मेथोडोलॉजी' था। यह ऑनलाईन कार्यशाला महावीर विश्वविद्यालय मेरठ एवं कान्सिल फॉर टीचर प्रोफेशनल डवलपमेंट ऑफ इंडिया के सान्निध्य में हुई।

अनुरूपित शिक्षण की फिडबैक बैठक

दिनांक 23 दिसंबर 2024। महाविद्यालय के बी. एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के अनुरूपित शिक्षण की फिडबैक बैठक प्राचार्य डॉ. फरजाना ईरफान की अध्यक्षता में आयोजित हुई। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. जयदेव पानेरी ने अनुरूपित शिक्षण की पूर्व योजना एवं उसके क्रियान्वयन के बारे में बताया और कार्यक्रम में अनुपस्थित रहे विद्यार्थियों

के लिए डीफाल्टर राउण्ड करवाने का सुझाव रखा। अनुरूपित शिक्षण को और प्रभावी बनाने के लिए भी संकाय सदस्यों से सुझाव मांगे गए। संकाय सदस्यों के सुझावों को कमेटी ने अमल में लाने का आश्वासन दिया।

आरएससीईटी का बैच जनवरी से

दिनांक 30 दिसंबर, 2024। महाविद्यालय के आरएससीईटी कोर्स में 50 एडमिशन पूरे हुए। तत्कालीन स्थिति को देखते हुए कमेटी ने विशेष छूट देकर अंतिम दिनों में 50 एडमिशन करके कीर्तिमान बनाया। इससे आरएससीईटी केंद्र का नवीकरण भी हो जायेगा। कीर्तिमान बनाने में प्राचार्य डॉ. फरजाना ईरफान और ऑफिस अधीक्षक सलीम मन्सूरी का विशेष योगदान रहा। बैच जनवरी से संचालित होगा।

अनुसंधान पर राष्ट्रीय कार्यशाला
अनुसंधान पर राष्ट्रीय कार्यशाला